सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कान्हा - प्रथम

Vibrant Pushti

“ जय श्री कृष्ण “

आधे मूंदे नयन

आधे उठें नयन

मेरा विरह मिटादे

मेरा विरह जगादे

मेरी प्रीत चुराले

मेरी साँस लूटादे

मुझमें अमृत घोल दे

मेरी आर्त झगमगा दे

मुझमें साँवरा रंग से सजादे

मेरी माँग में सिंदूर भर दे

नयन से नयन में तस्वीर बिठा दे

नयन से नयन की बूँद मिला दे

नयन के नयन की आग तडपा दे

नयन के नयन की बात समझा दे

हे प्यार!

न कभी नयन पलक बंध धरना

न कभी नयन पलक झुकाना

अपलक भरे आधे नयन से

सदा मेरे नयन से नयन जोडना

जगायी है प्रीत सदा स्थिर रखना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"राधा" को क्या समझते है हम?

उमड उमड कर आते है घनश्याम

एक कौंध से ज्योत जागती है

यह है राधा!

डगर डगर पर खिलते है मकरंद

एक महक सी साँस खिलती है

यह है राधा!

रज रज पर उठते है स्पंदन

एक अनोखी सी स्फूर्ति जगाती है

यह है राधा!

बूँद बूँद से उठती है तरंग

एक लकीर सी ऊंचाई खींचती है

यह है राधा!

झिलमिल से जागते है तारें

एक टीमाटीम सी झबकती है

यह है राधा!

विरह से तडपती है यादें

एक बूँद सी पिघलती साँस है

यह है राधा!

अधर से फडफडाती गूँजें

एक तुकार सी पुकारती आर्त है

यह है राधा!

धडकन से गाती सरगम

एक मधुर सी तान लहराती है

यह है राधा!

ओहहह राधा! तु कहाँ नहीं?

जीवन की हर प्रीत में है

तो तु हमसे क्यूँ बिछडती रहती है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"श्री कृष्ण" की मृत्यु तीर से कभी नहीं हो सकती।

इतिहास घुमा रहा है, शास्त्र घुमा रहा है।

जो केवल और केवल प्रीत करता है, उनकी मृत्यु ऐसे नहीं हो सकती।

"राधा" सच कहे - यह प्रीत धारा है तो "श्री कृष्ण" ऐसे नहीं मृत्यु पा सकते है।

यही ही सत्यता है कि "श्री कृष्ण" की मृत्यु तीर से नहीं हुई है, चोक्कस नहीं हुई है।

"श्री कृष्ण" की मृत्यु केवल और केवल "राधा" से या "राधा" की असर से ही हो सकती है।

सोच कर हमें चोक्कस बताना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रिये!

जन्म जन्म का साथ है तुम्हारा हमारा

जब तक न मिले आत्मा तुमसे हमारा

न तु चैन से रहेगा न हम बैचैन रहेंगे

चलता रहेगा सिलसिला अपने प्यार का

तुम मुझे ढूँढते रहोगे मैं तुम्हें पुकारता रहूँगा

कभी तु अवतार ले कर मुझसे मिलने आओगे

कभी मैं तेरे लोक परलोक में बसने आऊंगी

तेरा वादा तु निभाना मेरा वादा मैं निभाऊँगी

यही है तेरी मेरी रीत यही है तेरी मेरी प्रीत

जो तु कितना दूर रहे जो मैं कितना बिछडता रहूँ

मेरा सदा समर्पण शरण में धरना

मेरा सदा स्वीकार हर पल करना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे बादल! तु कहाँ से आया?

हे बादल! तु क्या बनके आया?

हे बादल! तु क्या करने आया?

हे बादल! तु किसका संदेश लाया?

हे बादल! तु कैसा रंग भर के आया?

हे बादल! तु कौनसा रुप हो कर आया?

हे बादल! तु कैसी रीत ले कर आया?

हे बादल! तु कौनसा सूर गाने आया?

हे बादल! तु क्या जगाने आया?

हे बादल! तु किसके इशारे आया?

हे बादल! तु क्या मिटाने आया?

हे बादल! तु ....

ओहहहहहह!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसा है यह नयन

जो क्या क्या करता रहता है!

नयन से तीर छूटे

नयन से नजर चुराये

नयन से इशारा करें

नयन से बातें कहे

नयन से मन में समाये

नयन से चोरी करे

नयन से नाच नचाये

नयन से आग लगाये

नयन से प्यार जताये

नयन से आँख मिचौली खेले

नयन से जादू दिखाये

नयन से नीर बरसाये

नयन से ज्योत जगाये

नयन से दिल मचलाये

नयन से सपने सजाये

नयन से समाधि संधाये

नयन से सूरज उगाये

नयन से चाँद खिलाये

नयन से गीत सुनाये

नयन से दर्द मिटाये

नयन से लूट चलाये

नयन से प्रीत बरसाये

नयन से अमृत पिलायें

नयन से प्यास बुझाये

नयन से आशीर्वाद पाये

नयन से दिशा दिखायें

नयन से एकरार जताये

नयन से विरह समझायें

नयन से मीत मिलाये

नयन से स्पर्श इजहारे

नयन से पहचान कराये

नयन से ....

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे"
यह रचना कैसे हुई और क्या समझा रही है?
यह प्रश्न हमने पहले भी पूछा था न कोई उत्तर पाया गया।
हम बार बार कृष्ण कृष्ण करते है पर कृष्ण नाम और कृष्ण लीला समझते नहीं है तो हम क्या कर रहे है यही नही समझते है तो धर्म और अध्यात्म से हमारा जीवन को कैसे संवारेंगे?
बस यूँ ही चलते रहेंगे एक बिना नाविक की नौका की तरह।
किताबों के अक्षर तो कहीं पढ़ें
किताबों के पन्नों तो कहीं लिखें
किताबों के लेख कहीं कोपी पेस्ट करके गये
पर न खुद जागे न ओरों को जगाया बस यूँ ही करते करते जीवन बिता दिया।
बातें तो बहुत होती है दूसरे के सुधरने के सूचन की पर खुद के संकल्प का न कोई ख्याल है।
न डूबो समय की धारा में
तैरना है "कृष्ण" नाम से
न डूबो अंधश्रद्धा के वमल में
संवरना है "कृष्ण" प्रीत से
न डूबो संसार की मोह माया में
पाना है "कृष्ण" भक्ति स्पर्श से
न डूबो आज के अंधे कुलों से
"कृष्ण" "कृष्ण" को लूटना है
"कृष्ण" "कृष्ण" समझ कर
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"राधा" र + अ + ध + अ = राधा

र - रस

र - रज

ध - धरण

रस रंग रूप धरण

रस रंग रूप रज नित्य नूतन धरण

रस रंग रूप रज तनुनवत्व धरण

रस रंग रूप प्रकट जुडत मन नयन तन

रस रंग रूप रज स्पर्श आत्म परम मिलन

रस रंग रूप रज घट घट परिवर्तन

रस रंग रूप रज प्रीत पंकज शरण

प्रकट कृष्ण प्रकट राधा प्रकट श्याम साँवरा

गोविंद गोपाल गिरिधर घनश्याम शामळा

मधुर जीवन मधुर जनम मधुर परमानंद

सर्वत्र मधुर क्षण मधुर साँस मधुर पूर्णानंद

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"कृष्ण लीला" में नागदमन लीला

कृष्ण ने यह जगत को यह लीला से जीवन, संसार, समाज और संप्रदाय का अति घूम रहस्य समझाया है।

क्या जानते है हम नागदमन लीला में -

गोप बालकों के साथ गेंद खेलते खेलते गेंद यमुना धारा में गीरी और कान्हा ने डूबकी लगाई, नाग का दमन करके नाग को कहीं ओर जाने को कहा। जो यमुना का जल को विष में रुपांतर कर रहा था जिससे गोकुल वासी जहर से नष्ट हो जाये।

गलत गलत

यमुना का जल शुद्ध हो जाये।

गलत गलत

आजतक हम यही वार्ता से समझते रहे।

सोचो - यह लीला इतनी साधारण हो सकती है?

नागदमन लीला यह ऐसी लीला रचाई थी कान्हा ने जो जगत की एक सर्वोत्तम लीला है। इतनी छोटी उम्र में जगत को अनोखा और अदभूत संकेत और मार्गदर्शन देना साधारण नहीं है।

नाग जो सदा विषेला, जहरीला और तत्काल क्षीण व्यापक है, यह जगत के विषयों भी विषेलें, जहरीले और तत्काल क्षीण व्यापक है, इनका सूक्ष्म भरा स्पर्श जीवन को तहस नहस कर देता है। तो कान्हा ने ऐसी रीत से यह नागदमन याने जगत विषयों दमन किया समझना अति आवश्यक है।

जैसे गेंद यमुना में गीरी, कान्हा लपक कर यमुना जी में डूबकी लगाई, धीरे धीरे कान्हा गहराई में जाने लगा जहाँ नागराज अपने कुटुंब के साथ रहते थे। कान्हा को देखकर नागराज और नाग कन्या विष उगलने लगी,

ओहहह! कितना विषेलां तीव्र जहर, जूते ही जीवन समाप्त। पर कान्हा टस से मस न हुआ, वह उगलते विष को अपने तन से लिपटा रहा था। जहर की हर बूँद छूते ही कान्हा का जीवन समाप्त। कान्हा ने तरकीब सोची.....

ओहहह! कितना विषेलां तीव्र जहर, छू◌ूते ही जीवन समाप्त। पर कान्हा टस से मस न हुआ, वह उगलते विष को अपने तन से लिपटा रहा था। जहर की हर बूँद छूते ही कान्हा का जीवन समाप्त। कान्हा ने तरकीब सोची.....

कान्हा नत मस्तक नागराजा के सामने खड़ा हो कर विनंती करने लगा, हे नागराज मैं नन्हा सा छोटा सा बालक, और आप इतने बड़े राजा आप मुझसे नाराज या मुझे क्यूँ मारना चाहते हो?

नागराजा ने देखा - हाँ! यह सचमुच छोटा बालक है, यह मुझे कुछ नहीं कर सकता, तुरंत ही विषेलां जहर उगलना बँध कर दिया और उनको अपने पेट में समाने की पैरवी सोचने लगा, इधर जैसे जहर बँध हुआ कान्हा ने सोचा अब काम हो जायेगा।

कान्हा ने मुसकुराते पूछा - यह विषेलां जहर आप के पास आता है कैसे या आप बनाते हो कैसे?

नागराज जोरों से हँसने लगा और कहने लगा - यह संसार में हम विचरते रहता है और जो सबसे विषेलां और विषयों युक्त जीव तत्वों है उन्हें चुस चुस कर हम हमारा जीवन रस रचते है, हमारा तन की रचना ही ऐसी है, जो हम कहीं भी पहुँच सकते है, इसलिए तो हम सदा विचरते रहते है। संसार का हर विशेषांक तत्व हमारा

आहार है, हम सदा लंपट, विषयों युक्त है, हमें न कोई मार सकता है पर हम सबको हमारी चुंगाल में फसा कर मारते है।

तो कान्हा ने कहा - आप इतने शक्तिशाली हो पर आपको हराने के लिए शायद यह जगत में कोई नहीं होगा! फिर भी आप मुझसे डर गये.... तो तो आपको हराने की कोई तरकीब तो होगी ही।

नागराज ने तुरंत घुरकी करी, पर कान्हा की मासूमता पर हँस कर कहने लगे, हाँ! मुझे हराने की सरल तरकीब है, पर यह जगत में कोई नहीं करता या अपनाता है। सब खुद को विषयों युक्त हो कर खुद को विषेलां बनाते है और सबको एक दूसरे के विष से मारते रहते है और हम सदा सलामत रहते है।

नागराज खडखडाट हँसने लगे, और कान्हा को लपेटने अपनी भूजा लंबाई।

कान्हा तो सजाग था, तुरंत लपक गया, थोड़ी दूर खड़े होकर पूछने लगा, अरे नागराज जी ! अगर यह तरकीब के सीवा दूसरी कोई तरकीब है जिससे आप भी सलामत और सब सलामत रहे?

नागराज ने कहा - यह मेरे विषेलें दंत है वह तोड़ दिया जाय तो मैं जिसे काँटु उन्हें विष की असर न हो। कान्हा नए कहा नहीं नहीं, कोई कैसे आपके विषेलें दंत तोड सकते है, यह नामुमकिन है।

नागराज खुंधु हँस कर बोलने लगे - और भी एक तरकीब है - जो कोई द्रृडता से अपनाये तो मुझे नाथ सकते है, हरा सकते है।

कान्हा जानबूझ कर मौन रहा, मुखडे पर कोई प्रतिभाव न दिख लाया, जिससे नागराज समझने लगे यह मूर्ख बालक मेरा कुछ नहीं बिगाड़ में और मैं उन्हें खा जाऊँगा।

नागराज अपने मद में चूर और विजयी की लालसा में कहने लगा - अगर कोई जीव तत्व खुद को निर्दोष, निर्मल, विशुद्ध और निर्मोही अपने कृत कृत्य से संस्कृत कर दे वह जीव तत्व मुझे आसानी से मार सकता है, नाथ सकता है, उन्हें मेरे कातील विष की असर नहीं होती है।

कान्हा ने अपना बाल स्वरूप को दृड किया और अपनी प्रीत भक्ति को तीव्र करके अपनी रोम रोम से ऐसा पवित्र स्वरूप परिवर्तन किया और नागराज पर जोर से मुष्टि प्रहार करके सब दंत तोड कर उन पर संवार हो गये, अपने पैरों से उनके शरीर को रोंदने लगे, नागराज के सर पर चड कर नाँचने लगे, संसार के हर विषेंले तत्वों पर विजय पा ली। नागराजा उनके शरण में आ गए।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री जगन्नाथ जी का प्राकट्य एक द्रढ विश्वास और पवित्रता की सर्वोत्तम भाव से प्रकट हुआ है। वहां के राजा जी योग्य और सेवा भावी आत्मीय था, सदा अपने इष्ट प्रभु और प्रजा के लिए ही सजाग था, यहीं नीति से श्री प्रभु सदा उन पर प्रसन्न रहते थे, यही सामर्थ्य से श्री प्रभु ने यहां प्रकट होने का निश्चय किया। राजा जी को सपने में कहीं बार आ कर प्रकट होने की इच्छा जताई।

एक बार श्री प्रभु ने राजा जी को कहाँ, अपने देश की समुद्र तट पर तुम्हें लंबे और बडे वृक्ष के लकडे मिलेंगे जो तुमने ऐसे लकडे कभी नहीं देखे होंगे, यही लकडे में से हमारा विग्रह बना कर मुझे प्रस्थापित करके मेरी सेवा करना। राजा जी ने यह सपने की आज्ञा से लकडे को पा कर अपने राज्य के

कुशल और योग्य कारीगर को दिया, उसी रात वह कारीगर को भी श्री प्रभु ने सपने में दर्शन दे कर अपनी श्रद्धा और विश्वास से विग्रह रचने की आज्ञा की, कारीगर ने यह बात राजा जी को कही , राजा जी ने कहा यह बात किसीसे न कहना, तो कारीगर ने शर्त रखी अगर कोई भी व्यक्ति जब रचते विग्रह को देख लिया वही क्षण से हम विग्रह को आपको

विग्रह को हम नहीं घड सकेंगे। राजा जी ने आज्ञा दे दी और वह कारीगर ने अपनी आत्मीय शुद्ध वृत्ति से आंतरिक प्रेरणा से रचना प्रारंभ किया, यहाँ राजा जी हर पल अति आतुरता से इंतज़ार करने लगे, जितने दिन व्याकुल में रहते थे उतने रात को व्याकुल रहने लगे, अपनी आंतर विरहता को सुलगाते हुए, जलाते हुए।

तन मन हर पल इतना बैचेन होता था कि कब श्री प्रभु दर्शन पाऊँ! ऐसे कहीं दिन और रात निकल गई, हर पल श्री प्रभु के विरह में वह पागल होने लगा, न भूख लगती थी और न प्यास बस केवल एक ही आश श्री प्रभु का दर्शन। ओहहह! हर रात सदा श्री प्रभु को प्रार्थना करता रहता है - प्रभु कब मिलोगे?

हुआ तो कुछ नहीं पर मेरी एकाग्रता में विक्षेप पडता है।

राजा जी की ऐसी दशा देख कर रानी जी भी आकुल व्याकुल हो गई, अपने पति की भक्ति की गंगा का स्पर्श वह भी पल पल करती थी, और उनकी यही तीव्रता ने

कलाकार की याने कारीगर की अवहेलना कर निर्मित स्थली का द्वार खोल दिए और जो संस्थापन हुई वह ही रचना का अलौकिक दर्शन आज भी हम करते है।

वो लकड़ी दारु प्रकार की थी, जो चमत्कारी रुप से यही समुद्र तट पर ही आयी थी।

हर साल वो लकडी बदलने की परम्परा राजा जी ने ही रचायी थी, जो आज भी चल रही है। वो लकड़ी के लिए हर अषाढी दूज के बाद चुने हुए प्रतिनिधि जंगल में जा कर ऐसी लकडी ढूँढते है, इसमें कहीं प्रकार की संज्ञा होती है। वही लकडी की शोध करते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे"

क्या है यह सूत्र? किसने रचा है? कैसे रचा है? क्या कह रहा है और क्या अनुभूति कराता है?

मेरे ख्याल से जगत का यह सूत्र पुकारने से तुरंत ही कोई अलौकिक अनुभूति होती है।

बिना संकोच प्रयत्न कर लो और जो अनुभूति हो वह आंतरिक प्रेरणा हो तो हमें कहो।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"कृष्ण" हर आत्मा का परमात्मा है।
"कृष्ण" हर जीव का रक्षक है।
"कृष्ण" हर संस्कार का शिक्षक है।
"कृष्ण" हर प्रीत का भिक्षुक है।
"कृष्ण" हर ब्रह्म का परब्रह्म है।
"कृष्ण" हर गुण का सतगुण है।
"कृष्ण" हर तत्व का परंतत्व है।
"कृष्ण" हर साँस की विशुद्धि है।
"कृष्ण" हर सिद्धि की परंसिद्धि है।
"कृष्ण" हर ख्याल का सृजन है
"कृष्ण" हर आँगन की तुलसी है।
"कृष्ण" हर दिप की ज्योति है।
"कृष्ण" हर कृति की संस्कृति है।
"कृष्ण" हर ज्ञान की उत्पत्ति है।
"कृष्ण" हर भाव की भक्ति है।
"कृष्ण" हर मुर की मुक्ति है।
"कृष्ण" हर रीत का अर्थ है।
"कृष्ण" हर मार्ग की जागृति है।
"कृष्ण" हर अक्षर की शिक्षा है।
"कृष्ण" हर किरण की शक्ति है।
"कृष्ण" हर सूर का संकेत है।
"कृष्ण" "कृष्ण" "कृष्ण" "कृष्ण"
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मन मीत" जो आग लगाये उसे कौन बुझाये?

"अधरामृत" जो प्यास लगाये उसे कौन मिटाये?

"माझी" नाँव डूबोये उसे कौन बचाये?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरत से पहचाने मुझको जमाना

मूरत से पहचाने विश्वास को जमाना

नहीं समझाये यह कैसी मिसाल

नहीं जगाये यह कैसी कमाल

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है साथ

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है प्यार

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है बंधन

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है संबंध

है प्रभु! तेरा मेरा कैसा है अंश

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जन्म जन्म का साथ है

निभाने को कहीं बार कैसे कैसे रूप स्वरूप में आये

पर

कान्हा!

तु भी अनेक रुप धरता है

तु भी हर बार हमारी तरह रुप बदल बदल कर आता है

अब यह रुप स्वरुप बदले ने की रीत कब तक रहेगी?

तेरे रुप में मुझे समाले

या

मेरे रुप में तु समाजा

यह एक होना ही सृष्टि का परिवर्तन है

तो क्यूँ न दोनों मिलके यह परिवर्तन करदे!

अच्छा!

मैं तो करता ही रहता हूँ,

तु नहीं करता है इसलिए तु सदा यहां तडपता और मुझे तडपाता है।

मैं तो कैसे अकेला निराला एक ही स्थान पर अडग रहता हूँ, इसलिए तो मुझे गिरिराज कहते है

इसलिए तो मुझे गोपाल कहते है

इसलिए तो मुझे गोविंद कहते है

इसलिए तो मुझे गोवर्धन कहते है

इसलिए तो मुझे गिरिधर कहते है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसे रहे तोरे बिन तेरे यह जगत में

जाना है जबसे नाम तेरा कृष्ण है

पाया है जबसे धाम तेरा गोकुल है

भटक भटक कर कहाँ कहाँ ढूँढा

नही मिला धाम तेरा

नही समझा नाम तेरा

कैसे भी आजा

जताजा नाम तेरा

दिखाजा धाम तेरा

अब तो रहा नहीं जाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृष्ण! कृष्ण! क्या है कृष्ण में ऐसा की हम कृष्ण! कृष्ण! करते है?

कभी एकांत में बैठकर सोचा है?

सारा समाज कृष्ण! कृष्ण! के पीछे दौड रहा है। कभी सोचा है यह कैसी धारा है, जिसमें सब बह रहे है?

कृष्ण पुकारने से कृष्ण को हम जानेंगे, कृष्ण को हम समझेंगे, कृष्ण को हम पायेंगे?

नहीं! नहीं!

भाव जगाने से हमें कृष्ण को छु लिया!

नहीं नहीँ!

स्मरण करने से

दर्शन करने से

सत्संग करने से

मनोरथ करने से

भागवत सप्ताह बिठाने से

परिक्रमा करने से

राज भोग धराने से

शृंगार सजाने से

धून गाने से

आदि आधार भूत साधन अपनाने से "कृष्ण" जान लिया, समझ लिया, पहचान लिया, पा लिया, अनुभूत कर लिया!

नहीँ नहीँ!

ऐसा नहीं है। तो क्या है?

कृष्ण! कृष्ण!

"कृष्ण" को जानने के लिए आंतरिक भाव के साथ आंतरिक ज्ञान होना आवश्यक है।

"कृष्ण" को समझने के लिए अपना तन मन आत्म और धन की योग्यता समझनी चाहिए।

"कृष्ण" को पहचानने के लिए बाह्य और आंतरिक परिवर्तन की अनुभूति होनी चाहिए।

"कृष्ण" को पाने के लिए हमारा तन, मन, धन, और आत्म प्रीत की रीत अपनानी चाहिए।

हम खुद खुदको प्रेम नहीं करते है तो कृष्ण से प्रीत कैसे होगी?

हम खुद यह जगत में है, यह क्यूँ है? यह ही नहीं जानते तो कृष्ण को कैसे जानेंगे?

हम खुद यह संसार की रीत में क्यूँ है? यह रीत नहीं समझते तो कृष्ण को कैसे समझेंगे?

हम खुद अपने साथ रहते अपने माता पिता, पत्नी, और अपने से जने हुए बालक को नहीं पहचानते है? तो कृष्ण को कैसे पहचानेंगे?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन की है यह रीत न्यारी

जो जो नजदीक वो वो दूर होय

तन तडपाये मन कुचलाये

फिर भी न पास होय

जीवन की है यह गति निराली

जो जो दौडे वो वो झगमगाये

विश्वास जगाये हिम्मत बढाये

समय चीरता जाय

जीवन की है यह प्रीत सुहानी

जो जो छुये वो वो लूट लूटाये

खुद जगाये खुद मिटाये

सबको जोडता जाय

सत्य सत्य की है यह पहचान

जो हमने तुम्हें याद से पाया

तुमने हमें संवार संवारते पाया

यही है साँवरिया की पहचान

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जाओगे जहां तुम नैनों से कहीं दूर

दिलसे कैसे जाएगी कान्हा प्रीत मधुर

हाथ छुडाकर भाग रहे हो कान्हा हम से दूर

पर बसी हुई धडकन की प्रीत से कैसे होंगे दूर

मेरी मृत्यु से मेरे नैन से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरे तन से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरे आँचल से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरे विरह से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरी धडकन से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरी साँसों से जाओगे

कान्हा मुझसे कही दूर

पर मेरे नैन की तस्वीर से कैसे जाओगे

पर मेरे तन की तडपन से कैसे जाओगे

पर मेरे आँचल की छाँव से कैसे जाओगे

पर मेरे विरह की आग से कैसे जाओगे

पर मेरे धडकन के सूर से कैसे जाओगे

पर मेरे साँस की उष्मा से कैसे जाओगे

कान्हा! बहोत कठिन राह है पनघट की

कैसे आओगे जमुना के तीर

जहां मैंने बसायी है प्रीत कुटीर

न चलेगी वहां गोलोक की रीत

न चलेगी वहां ब्रह्मांड की द्वित

न चलेगी वहां स्वर्ग की जीत

चलेगी चलेगी सिर्फ दिल की प्रीत

जो सदा गूँजती है सृष्टि के सृजन

चलेगी चलेगी सिर्फ मन की मित

जो सदा बसती है प्रकृति के संग

चलेगी चलेगी सिर्फ धडकन की गीत

जो सदा पुकारती है आनंद की धुन

कान्हा! संवर जा!

कान्हा! संभल जा!

कान्हा! जाग जा!

कान्हा! अब न भागना!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री मद् भागवत में "देवकीजी" का स्मरण तो हम सब पहचानते है। जो आकाशवाणी ने कहा था - हे कंस! देवकी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा।

देवकी - कौन है? क्या है? कैसी है?

जो कोई भविष्यवाणी उनके लिए हो!

जो कोई ऐसा सिद्धांत प्रकट होने को है जो देवकी के उदर से हो!

यह सारे ब्रह्मांड में केवल एक ही गर्भ ऐसा था और वह केवल देवकी का!

हर स्त्री का परम प्रमुख सन्मान है जो हर मातृत्व चाहती है कि मेरे उदर से कोई प्रखर आत्मा ही जन्म धरे!

सच! देवकीजी! सर्वश्रेष्ठ सर्वोच्च सर्वोत्तम और सर्वाधिक कुलदीप ज्योतिर्धर!

कितनी विशुद्धता - पवित्रता और योग्यता - निर्मलता - निर्मोहता होगी जो देवो के देव परम परमात्मा का सच्चिदानंद स्वरूप उनके उदर से प्रकट हो! 🌷🙏🌷

वाह!

देवकी जो जन्मोजन्म केवल परब्रहम के लिए ही जन्म धरे

देवकी जो सदा जप तप स्मरण यज्ञ चिंतन धर्म वात्सल्य में ही खुदको निरुपीत किया हो।

परमानंद प्रकट हो हो और हो।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

लकुटिये जुल्फें लिपटाये अंग अंग पर

मोर मुकुट कनक कुंडल नचाये तन तन

कजरारे तिरछे नैन तीर चुभे ह्रदय व्रज पर

अधर बंसी गूँज भीगोये घट घट बदन पर

पीला पीतांबर लहर लहर ढले वक्षस्थल पर

नीला पायजामा घुमाये घरर घरर आरुढ कर

कान्हा! कैसा है यह तेरा रहना

जो सदा खींचें तेरे ही अंगना

तुझे लिपटु तुमसे नाचु तुझसे चुभु तुमसे भीगाऊ

तुझसे लहराऊ तुमसे घुमाऊ सदा तुममें खो जाऊँ

क्या करु मैं क्या करूँ क्या करु मैं क्या करूँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हर पल हर घडी हर क्षण

कहती रहे

आज जीने की तमन्ना है

आज मरने का इरादा है

यही थी हर पल हर घडी हर क्षण

राधा कृष्ण की

कभी मिलते है कभी बिछडते है

कभी मिलते थे कभी बिछडते थे

कभी साथ रहते है कभी अलगते है

कभी साथ रहते थे कभी अलगते थे

कभी पास रहते है कभी दूर रहते है

कभी पास रहते थे कभी दूर रहते थे

पर

न कभी बिछडते है न कभी बिछडते थे

न कभी अलगते है न कभी अलगते थे

न कभी दूर रहते है न कभी दूर रहते थे

हाँ!

राधा बरसाना रहती है कान्हा नंदगांव

राधा वृंदावन रहती है कान्हा गोकुल

राधा गहरवन रहती है कान्हा मधुवन

राधा व्रज रहती है कान्हा द्‌वारका

पर

वह दोनों सदा

आज जीने की तमन्ना है

आज मरने का इरादा है

अर्थात

सदा एक हो कर जीते है

सदा एक हो कर मरते है

जीते है - खुद में खुद की प्रीत बसा कर

मरते है - खुद में खुद को न्योछावर कर

राधा - खुद

कृष्ण - खुद

खुद - राधा

खुद - कृष्ण

जो खुद खुद में बस जाये

जो खुद खुद से न्योछावर जाये

वह अमृत हो जाते है

जो सदा जीते है - न कभी मरते है

इसलिए

आज जीने की तमन्ना है

आज प्रीति का इरादा है

आज भी हर पल हर घडी हर क्षण

राधा मुझमें है कृष्ण मुझमें है

कृष्ण मुझमें है राधा मुझमें है

राधा तुझमें है कृष्ण तुझमें है

कृष्ण तुझमें है राधा तुझमें है

राधा तुझमें है वह मुझमें है

कृष्ण तुझमें है वह मुझमें है

राधा मुझमें है वह तुझमें है

कृष्ण मुझमें है वह तुझमें है

यही ही है मधुर प्रीत मिलन की पराकाष्ठा

यही ही है मधुर प्रेम एकात्म की श्रेष्ठता

यही ही है मधुर प्रेमात्म आत्मा की पवित्रता

जो

सदा अमृत है

सदा प्रेमामृत है

सदा मधुरामृत है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

न कोई बैर तुझसे

न कोई गैर तुझसे

प्रित करे तो रीत निभाये

फिरभी क्यूँ न चैन मुझमें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

न कोई मांग तुझसे

न कोई व्यंग तुझसे

नित नित याद करके चाहे

फिरभी क्यूँ न रैन मुझमें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

ऐसे पागल न करो श्याम

मुझसे दूर दूर न रहो श्याम

रीत सिखायी जो तुने हमें

खोये रहे पल पल तुममें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

आजा आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

तु न आये तेरी याद सताये

तु न पाये तेरी बिरह जताये

कैसी यह प्रीत जो चैन न आये

कैसी यह रीत जो शयन न आये

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

यहां जहां साँवरे रंग निहालु

अंग अंग साँवरा संग मिलाऊ

कैसी यह गति जो ठहर न जाये

कैसी यह मति जो मुक्त न पाये

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितने डूबे है हम

कितने खोये है हम

कितने जुडे है हम

सारी साँसों से

सारी द्रष्टि से

सारी प्रकृति से

सारी सृष्टि से

सारी मति से

सारे मन से

सारे तन से

सारे धन से

सारे रोम से

सारे ज्ञान से

सारे भाव से

सारे कर्म से

सारे रंग से

सारे पुरुषार्थ से

सारे बाह्य तरंग से

सारे अंत:करण से

सारे तत्व से

सारे स्पर्श से

सारे अक्षर से

सारे आत्म से

सारे भव से

सारी घडी से

सारी जडी से

सारी जिज्ञासा से

सारी निधि से

सारी नीति से

सारी गति से

सारी दिशा से

सारी रज से

"श्री कृष्ण" से कि

हर कृति तो उनके लिए

हर वृत्ति तो उनके लिए

हर संस्कृति तो उनके लिए

हर पुष्टि तो उनके लिए

हाँ! " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! पूर्व बंगाल में

हाँ! पश्चिम गुजरात में

हाँ! उत्तर कश्मीर में

हाँ! दक्षिण तमिलनाडू में

हर स्थली स्थली पर

हर मानव मानव पर

हर उत्सव उत्सव पर

हर धर्म धर्म पर

हर आनंद आनंद पर

केवल " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! इतनी गहराई से डूबे है

हाँ! इतनी अधिराई से खोये है

हाँ! इतनी प्रीत से जुडे है

हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे कृष्ण!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृष्ण कृष्ण को सोप दिया

तो कृष्ण कृष्ण से आँख मिचौली क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से जोड दिया

तो कृष्ण कृष्ण से अधुरप क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रंग दिया

तो कृष्ण कृष्ण से द्विरंग क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से वरण किया

तो कृष्ण कृष्ण से छल क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से अंश पाया

तो कृष्ण कृष्ण से रसहीन क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से धर्म संस्थापाया

तो कृष्ण कृष्ण से अधर्म क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से प्रीत जताई

तो कृष्ण कृष्ण से बेवफाई क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रास रचाई

तो कृष्ण कृष्ण से अवैधता क्यूँ?

हे परब्रह्म! आपने मुझे जो भी जन्म - जीवन - संस्कार - संसार - सृष्टि - प्रकृति और ऋणात्मक संबंध दिये है वह निभाते निभाते पुरुषार्थ अविरत क्षण क्षण करता रहता हूँ, पर कभी कभी ऐसा विचार भी जागता है - यह कैसा जीवन?

पर

साथ साथ ऐसा भी विचार जागता है - हे कृष्ण! तुम्हें भी ऐसा होता ही होगा तो तु कैसे धीरज और संयम रखता है तो मैं भी शांत हो जाता हूँ।

हे कृष्ण! क्या ऐसा ही जीवन है?

हर अंश ऐसे ही!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

फुरसत नहीं है जीवन में कैसे है हम

हमारा जीवन है या औरों के लिए हम

हमसे बाते करे मुलाकात करे औरों से कम

हर बार कहे तुमसे है हे हम

नहीं पता पाया कैसे है हम

हम ही हमको न पहचाने

कैसे हम किसीको पहचाने

ढूँढने निकले जगत में कहीं ही हो तुम

निकट हो तो भी दूर नजर आये है हम

कैसा जगत कैसी रीत

खुद न पहचाने खुद की समज

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना मधुर पथ है जीवन

हर साँस में आनंद का संगम

हर पलक में प्रकृति का चित्रण

हर विचार में आत्म का चिंतन

हर संबंध में एकात्म की सरगम

हर क्षण में ज्ञान की उर्जन

हर दृष्टि में जिज्ञासा की सर्जन

हर अंग में गति की चंचल

हर अक्षर में विद्या की गर्जन

हर रज में मंजिल का दर्शन

हर बूँद में तृप्ति की अर्चन

हर लहर में रीति का परिवर्तन

हर डग में कृति का विश्वास

हर अचल में प्राण का विश्राम

हर स्वर में सरगम की धून

हर गूँज में विरह का संदेश

हर आँचल में वात्सल्य का आदेश

हर आत्म में प्रीत रस की ज्योत

कितना मधुर कितना सुंदर कितना उल्लास सभर जीवन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या पढे यह आकाश से

क्या समझे यह धरती से

क्या सुने यह पंखीओं से

क्या रंगे यह फूलों से

क्या चमके यह चांद सितारों से

क्या गाये यह हवा से

क्या खिले यह वनस्पति से

क्या क्या करे जीवन तराने से

ढूँढते रहते है

इंतजार करते रहते सुबह की किरण के

जो सदा चमके अपनी आत्म ज्योत से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"पापमौचन" एकादशी

पता नहीं क्यूँ पाप करने का

"Vibrant Pushti"

नहीं है यह जगत पाप को जगाने का उदभव स्थान

नहीं है यह जगत दुराचार की खेती उगाने की धरती

नहीं है यह जगत एक दूसरे से लडने की भूमि

नहीं है यह जगत उंच निच खेलने का रमत मैदान

नहीं है यह जगत खुद को तोड के खुद को छोडना

नहीं है यह जगत खुद को मार के खुद को मिटाने

यह जगत तो है एक कर्मनिष्ठ धरती जहां केवल बिज बोना है संस्कार का

उगानी है पवित्रता

उगानी है निखालसता

उगानी है विशुद्धता

उगानी है विश्वासनियता

उगानी है प्रीतता

उगानी है शिस्तता

उगानी है एकता

उगानी है सत्यता

उगानी है निर्भयता

उगानी है मित्रता

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"संप्रदाय"

सं - समानता संस्थापक

सं - संस्कृति संस्थापक

सं - सुरक्षित संस्थापक

सं - सुयोग्य संस्थापक

सं - सत्य संस्थापक

सं - सर्वज्ञ वेदांतक

सं - सम्यक परम आत्म तत्व

प्र - धर्म प्रज्वलित

प्र - प्रज्ञान प्रज्वलित

प्र - प्रदान परंतप

प्र - प्रमय बल साधक

प्र - प्रणय प्रणेता

प्र - प्रशांत प्रबंधक

प्र - प्रचुर परमानंदक

प्र - प्रखर नियामक

प्र - प्रज्ञेश पथदर्शक

प्र - प्रज्ञा व्यापक

दा - दार्शनिक

दा - दाता

दा - दिशा सूचक

दा - दास्य उद्धारक

दा - दोष दमनात्मक

दा - शुद्धाद्वैत धारक

य - योग

य - योग्य

य - सदा के लिए स्थापन करना

य - सदा में अयन करना

= संप्रदाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"भक्ति" कैसे समझे?

"भक्ति" कैसे जगाये?

"भक्ति" की अनुभूति कैसे करें?

कान्हा प्रीत भाव का प्रतीक है या परब्रह्म का प्रतीक है?

किताब पढा, प्रवचन सुना, हर सत्संग का भावार्थ जाना पर हमारे मन को, हमारे तन को, हमारी प्रकृति को पहचान कर, हमारी शिक्षा और संस्कार को पहचान कर हम योग्य करते है? जिस तरह से एक सिपाही सबकुछ पढता है, शिक्षा पाता है, यही सर्वत्र का उपयोग खुद की और अपने देश की सुरक्षा के लिए करता है यही हमें भी करना है।

पर

सच कहें तो न खुद को सलामत नहीं रखते है तो औरौंके लिए तो क्या कर सकते है?

आज पुष्टि मार्ग की हालत क्यूँ ऐसी है?

आज हमने जो पुष्टि मार्ग अपनाया है तो हम क्यूँ विश्वास से "श्री वल्लभ" के "श्री यमुना" के "श्री श्रीनाथजी" के नहीं है?

क्यूँकि हम सच्चे सिपाही नहीं है उनके सच्चे सेवक नहीं है।

पाठ करने से, नाटकीय सेवा करने से, धून या भजन गाने से, कोई एक छोटी सी समझ को खुद को बडा ज्ञानी समझलेना योग्य नहीं है।

जबतक खुद को योग्य नहीं करेंगे तबतक कुछ नहीं होगा।

हमारी जीवनशैली में हर पल अन्याश्रय करते है, हमारे विचार और क्रिया को बार बार परिवर्तन करते रहते है तो कैसे पायेंगे भक्ति और भगवान का मार्ग?

हमारे "अष्टसखा" मनुष्य जीवन की अलौकिक मिशाल है। हर पल "पुष्टि सिद्धांत" के सानिध्य में तो श्री वल्लभ" दोडके गये उनके द्वार! यही योग्यता है भक्ति और भगवान की। यही योग्यता है मनुष्य जीवन की।

हर एक मार्ग की कोई न कोई कृपा होगी, हर मार्ग योग्य ही होगा। हमें नहीं जानना है।

यह प्रथम विचार परिवर्तन की आवश्यकता है।

हमें केवल अपना, अपनों ने जो जन्म और धारण किया है और हमनें भी सही समझ के यह पुष्टि मार्ग में निरुपित हुए है। हमें प्रथम हमारी जागृतता केलवनी है। हमें हमारे "श्री वल्लभ" के सिद्धांत को अपने जीवन में कृतार्थ करने अपनाते जायेंगे हम अपनी सत्यता पहचानते जायेंगे।

हर पुष्टि विचार और क्रिया को सूक्ष्मता से जानिए और धीरे धीरे निरुपण करते जाना है।

प्राथमिक समझ तो हमें हमारे जन्म धारण से और माता पिता की जीवनशैली से मिले ही है और हम बार बार कथा, पुस्तकें, शास्त्र, प्रवचन, सत्संग से जुडते ही है। हर एक में से सूक्ष्मता तरास कर खुद में ही अपनाना है। यही प्रथम सीडी है पुष्टि मार्ग को पहचानने की, अपनाने की, केलवनी की।

"भक्ति"

भक्त > भगवान

और

भगवान > भक्त

भक्त + भाव + ज्ञान + भगवान = भक्ति

भगवान + भाव + ज्ञान + भक्त = भक्ति

मनुष्य जन्म से ही कितने भाव से जगत में आता है।

वात्सल्य भाव

सख्य भाव

माधुर्य भाव

हास्य भाव

शांत भाव

और

वृत्ति भाव।

यह वृत्ति में कहीं अनगिनत परिस्थिति का निरुपण है। कैसी कैसी परिस्थिति के परिणाम स्वरूप मनुष्य का जन्म होता है। यह परिस्थिति में जो जो भाव जागते है उसके मुताबिक मनुष्य का जन्म होता है। यही जन्म अनुसंधान उनके अंदर जागृत होते भाव का प्रकार से उनका भाव और ज्ञान का समन्वय से वह भगवान की तरफ गति करता है ऐसा उनका विश्वास और भाव ढ्रड होता है उन्हें उनकी भक्ति कहते है।

अति आवश्यकता से समझना

"भक्ति"

अपनी संस्कृति के कहीं चरित्र, अपने संस्कृति के घडवैये कहीं ऋषियों,

अपनी संस्कृति के रचहिते कहीं आचार्यें ने भक्ति की व्याख्या, अर्थ, निरुपणता, सैद्धांतिकता अपनी अनुभूति और शुद्ध सत्य की पहचान से जतायी है - दर्शायी है।

भक्ति भाव + ज्ञान + अनुभूति + निस्वार्थ + निष्कपट + निष्काम + न्योछावर + निष्कंटक + निर्मल + निर्मोही और शरणागत हेतुक ही परमार्थि है, परम प्रेम रुपा, अमृत स्वरुपा है।

मनुष्य जगत में है तो उनमें कहीं न कहीं अंशे वात्सल्य, सख्य, माधुर्य, हास्य, और शांत गुण के साथ ही जन्म धारण करता है, जैसे जैसे समझता जाता है तब ही कहीं वृत्ति का जोडना होता है उसी प्रकार वह भक्ति की निरुपणता की कक्षा पाता है। भिन्न भिन्न उपर बताये अंश की मात्रा से उनकी पहचान होती है।

यह सनातन है। हम भी यही अंश निरुपीत है ही पर हम कैसे समझे?

हम समझे हमारी विचारधारा से

हम समझे हमारी जीवनशैली से

हम समझे हमारी वृत्ति प्रवृत्ति से

हम समझे हमारी आंतरिक उर्जा से

हम समझे हमारी घटती जीवन परिस्थिति से

हम समझे हममें उजागर आत्मीय चेतना से

यह कोई और किसीके प्रामाणित नहीं है, यह केवल और केवल निज नित्य स्वरुप से ही योग्यता परखाती है।

हमारे अष्टसखा चारित्र्य यह निज नित्य स्वरुप अनुभूति है। यह चारित्र्य इतने रसात्मक है कि जब भी उनका स्मरण करे हममें वह रस का उदभव होता है। इससे बडा प्रमाण क्या चाहिए!

सच जगत की जो भी संस्कृति यह भक्ति निर्देशक है तो हमारी हिन्दु संस्कृति अपनी योग्यता सार्थक करती है।

मनुष्य के जीवन में भक्ति एक तादात्म्य गुण है और यही गुण से ही वह स्व की पहचान कर सकता है। वह श्री प्रभु की निरोध लीला समझ सकता है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या कहें क्या सुने यह तो लोग है

कहते कुछ सुनते कुछ है करते कुछ है

क्या मैं भी यह लोग में हूँ?

क्या मैं भी कहता रहता हूँ?

क्या मैं भी सुनता रहता हूँ?

क्या यही करने में मैं हूँ?

ओहहह!

मुझसे यह लोग है?

मुझसे यह समाज है?

मुझसे यह जगत है?

क्या क्या करना है मुझे?

मुझे करना ही है ऐसा

जो चाहे लोग कहे या लोग सुनाये।

करना है यहाँ ही ऐसा

जो करके जागे सारी दुनिया

यही तो जन्म है

यही तो लोग है

यही तो जगत है

तो चोक्कस करुंगा!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"होली" होली हमारा जीवन में, हमारी संस्कृति में क्या क्या रंग भरती है?

रंगों से सभर

रंगों से उभर

रंगों से जिगर

रंगों से अमर

रंगों से अधर

रंगों से नजर

रंगों से लहर

रंगों से सवार

रंगों से प्यार

रंगों से दुलार

रंगों से बहार

रंगों से संवार

रंगों से ररररर

हिन्दु संस्कृति का अनोखा उत्सव, त्यौहार की रीति और रचना

सच में कहे तो यह ब्रह्मांड का अलौकिक रंग है।

हर साँस, हर क्षण, हर तरंग, हर उमंग, हर लहर, हर तत्व, हर शमा, हर गीत, हर संगीत, हर अदा, हर किरण, हर बूँद, हर उर्मि, हर रज, हर सृष्टि, हर टहूँका, हर निधि रंग रंग से बरस रही है।

नजर नजर पर रंग

अंतर अंतर पर रंग

डगर डगर पर रंग

उच्छवास उच्छवास पर रंग

यही है यह होली

मेरे संग संग खेली

मेरे अंग अंग चोली

मेरे मन मन में रंगोली

मेरे तन तन में डूबोली

मेरे दिल दिल में प्रितली

होली मेरे धडकन की लाली

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"अगियारस" अग + ई + आ +रस = अगियारस।

अग - जागृत

ई - अति

आ - ढ्ड - निश्चित

रस - योग्य प्रकार के बूँद का समूह

जीवन में यह रीत सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, सुसज्जित, सलामत और पवित्र।

अगियारस को समझना अति आवश्यक है।

अगियारस में जीना अति सैध्दांतिक है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक विश्वास है जो बचपन से माता पिता ने सिंचा है,

एक रीत है जो बचपन से समाज ने हमें शिखाया है,

एक शिक्षा है जो बचपन से विद्या मंदिर में शिखाया है,

जैसे जैसे बडे होते जाते है तो देश की संस्कृति हमें शिखाती है यह धर्म में हम बंधे है जिससे हम अपने जीवन संस्कृत करते रहते है।

पर

आखिर सत्य की पहचान कर पाते है?

आखिर जो माता पिता ने जो सिंचा है वह सत्य है?

आखिर जो समाज ने शिखाया है वह सत्य है?

आखिर जो विद्या मंदिर में शिखाया है वह सत्य है?

आखिर जो देश की संस्कृति ने जो शिखाया है वह सत्य है?

या

हम धीरे धीरे बडे होते जा रहे है और

सत्य को समजते है,

शिक्षा को समजते है,

धर्म को समजते है,

समाज को समजते है,

संस्कृति को समजते है,

खुद को समजते है और जो तय करते है वह सत्य है?

सच कहें

जो खुद समज कर जो तय करे वहीं सत्य है।

तो हम अंधश्रद्धा और रुढिचुस्तता में नहीं बहके जायेंगे या नहीं फिसल जायेंगे।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमें कुछ होता नहीं है?

हमें जो कुछ कोई सुनाये वह जूठ है हम जानते है तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमसे जो कुछ कोई व्यवहार करें वह निम्न है तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमारे सामने ही असभ्यता भरी क्रिया करें तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमें सही रास्ता कह कर हमें अयोग्य मार्ग दर्शन करें तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमें न्याय की परिभाषा समझा कर खुद अन्याय की कृति सर्जे तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हममें विश्वास जगा कर हमें लूटें तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमारी लागणीओं से खेल कर खुद को हमसे होशियार समझाये तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमसे सरलता की दुहाई दे कर खुद आटीघुंटी खेल कर हमसे अघटित व्यवहार और क्रिया करें तो भी हम सहन सहन कर कुछ नहीं कर सकते!

हमसे निस्वार्थ वृत्ति से संबंध जोड कर हर रीत में स्वार्थ वृत्ति का आचरण करें तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हमें धर्म की रक्षा और शिक्षा का उपदेश करें और खुद ही अधर्म और अश्लील क्रिया करें तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

हममें समाज से जुडने और समाज की एकता की भावना जगाये और खुद समाज विरोधी अभियान चलाये तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

खुद से खुद का लहू संबंध को लहू चुसने का व्यवहार करें तो भी हम कुछ नहीं कर सकते!

कैसा है यह जीवन हमारा

कैसी है यह सोच हमारी

कैसी है यह क्रिया हमारी

कैसा है यह व्यवहार हमारा

कैसी है यह शिक्षा हमारी

कैसा है यह संस्कार हमारा

कैसा है यह संबंध हमारा

हमसे हम खुद बरबाद हुये है तो भी हम कुछ नहीं करते!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज्ञा समझ कर आज्ञा चाहि

कौन आज्ञा करें?

आज्ञा समझ कर आज्ञा पायी

कौन आज्ञा अपनाये?

आज्ञा को क्या क्या समझें!

आज्ञा को कैसे कैसे अपनाये!

न आज्ञा करने वाले समझाये!

न आज्ञा अपनाने वाले समझाये!

आज्ञा से आज्ञा

आज्ञा अवज्ञा

अवज्ञा आज्ञा

यह रीत करते आये हम मतवाले!

यह रीत अपनाते आये हम नासमझ वाले!

यही है हमारी जीवन पथनी

जो जो जैसे तैसे चलाये

जो जो जैसे तैसे घुमाये

घुमे जगत घुमे धर्म घुमे भगवान

यही है पहचान!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"स्त्री दिन" क्यूँ ऐसा?
क्या माहत्मय है आज?
जन्म धरते ही स्त्री - माता
अमृत रस पान कराते ही स्त्री - माता
धर्म संस्कार सिंचते ही स्त्री - माता
समझ धरते ही स्त्री - पत्नी
सेवा साथ निभाते ही स्त्री - पत्नी
कदम कदम साथ चलते ही स्त्री - पत्नी
आनंद आँचल लहराते ही स्त्री - पत्नी
विरह प्रीत रस बहाते ही स्त्री - पत्नी
दु:ख भंजन काटते ही स्त्री - पत्नी
धर्म रक्षा कवच बांधते ही स्त्री - बहन
जीवन मधुर धरते ही स्त्री - बेटी
"स्त्री है तो अंश है"
"स्त्री है तो जीवन है,
"स्त्री है तो शक्ति है"
"स्त्री है तो संस्कृति है"
"स्त्री है तो प्रीति है"
"स्त्री है तो संतति है"
"स्त्री है तो मुक्ति है"
"स्त्री है तो भक्ति है"
"स्त्री है तो संपूर्णता है"
"स्त्री है तो ऐकात्म है"
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खुद से उत्सर्ग हुए उच्छ्वास ही खुद है

खुद से कहे हुए स्वर ही खुद है

खुद से निरखि हुई दृष्टि ही खुद है

खुद से प्रकट हुए किरण खुद है

खुद से किया हुआ स्पर्श खुद है

खुद से जागृत हुए विचार खुद है

खुद से किये हुए क्रिया खुद है

खुद से रचा हुआ जगत खुद है

खुद से बांधा हुआ संबंध खुद है

खुद से प्रस्थापित हुआ धर्म खुद है

खुद से ही खुद है तो खुद की पहचान भी खुद से ही है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बांधा संकल्प मंदिर दर्शन करने को

तन सुधारा मन सांधा चंचळ संसार से

नयन आतुर पैर व्याकुल पवित्र महक पाने को

दौडा दौडा पहूँचा कहीं शरीर कहीं अधीर

कतार खडी एक एक दर्शन स्पर्श करने को

सब मतवाला मैं मतवाला कैसे कैसे आश धरने को

छुया नयन पूर्ण संकल्प किया शरण छू कर

मन समझा बडा काम किया

तन समझा बडा पवित्र भया

भीतर भीतर नहीं आत्म संतोष नहीं

क्यूँ जागा ऐसा धडकती धडकन को

आसपास देखा सब को निहाला

बाहर उजाला पर मन में अंधेरा

जहां जहां में है हमसब मतवाले

कैसे सुने क्या क्या छुये प्रभु निराले

चलती है दुनिया दौडते है अंध पिपासु

रचे परम्परा जन्म जन्म की

कैसी तरसी है ये दुनिया छिपाये प्यास पैसो की

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"JSK"

जो भी व्यक्ति ऐसा कह कर या लिख कर क्या कहना चाहते है, वह जानते है?

नहीं जानते हो तो मैं बता दूं?

जो "JSK" कहता है और लिखता है वह हम सब को यह कह रहा है और जता रहा है और दर्शा रहा है -

"JSK" या ने

J - जो

S - शिखा

K - खो दिया

मैं ऐसा हूँ अभी आप समझलो

ऐसा कह रहा है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रंग बरसता है नयनों से सपना जगा कर

रंग बरसता है साँसों से पुरुषार्थ जता कर

रंग बरसता है होठों से मधुर स्वर पुकार कर

रंग बरसता है धडकन से प्रभु प्रीत गुण गा कर

रंग बरसता है अंग से प्रस्वेद बूँद उत्स कर

रंग बरसता है हस्त से गुप्त दान क्षमा कर

रंग बरसता है कदम से मंजिल पहूँच कर

रंग बरसता है मन से शुद्‌ध विचार चिंतन कर

रंग बरसता है कर्म से निष्काम फल पा कर

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

किस धन को अपना समझते हो? यह पैसा, यह जर झवेरात!

किस मिल्कत को अपनी समझ बैठे हो? यह मकान, यह खेत!

किस आभूषण से सजते रहते हो? यह नकली दिखावा - लपेटा!

क्या वह आपका है? नहीं नहीं

हमारा सही धन केवल हमारे अंदर खिलती केवल बुद्धि है।

हमारी सही मिल्कत केवल हमारा तन है जिसे संभालना है रोग और कुचरित्रों से।

हमारा सही आभूषण है केवल हमारा संस्कार है जो हमें यही संसार और जगत से ही समझ कर खुद को और सृष्टि को योग्य करना है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितने प्रकार के एहसास करते करते हम जीते है हमारा जीवन।

जो एहसास हमारे तन मन और आत्म को छुते है वह हर एहसास से हम बहुत कुछ पाते है और जिससे हम हमारी जीवन धारा बहाते है।

ऐसा एक एहसास है प्रीत का जो हमें हमारी उच्चता पर पहूँचाते है। यह एहसास से ही विश्वास का संपादन होता है और जीवन को धन्य करता है।

हमारे जीवन में यह विश्वास को अलौकिक रुप में और लौकिक रुप में भी अनुभूत करते है। सच कहे तो यह विश्वास केवल अलौकिक रुप ही होता है पर हमारे विचार, क्रिया और संस्कृति से यह विश्वास को लौकिक रुप भी देते है।

बस! यह ही हमारे जीवन, विचार और संस्कृति की अधोगति है, हम भटक जाते है और जीवन नष्ट कर देते है। आज हम जहां जहां भी अपने आप को महसूस करते है तो क्या क्या और कैसा कैसा? ओहहह! सच कहें हम खुद का जीवन के साथ समाज का स्तर भी निम्न कर देते है और जहां छुये वहां केवल दु:ख, अफवाहें, नफरत और अशिक्षितता द्रड होती है और हम ऐसे समाज में जीते जीते कितना गिरा हुआ जीवन जीते है।

क्या यही हम है?

क्या हम ऐसे एहसास में जीते है?

क्या हम ऐसे समाज के घडवैये है?

क्या हम यही जीवन जीने के लिए है?

नहीं नहीं! हमें ऐसा नहीं होना है।

हमें शुद्ध और योग्य जीवन ही जीना है। तो

हर विचार योग्य

हर क्रिया में सुयोग्य

हर कृति में सहयोग

हर वृत्ति में समयोग

तो जीवन में पारदर्शकता

तो जीवन में सुयोग्य व्यवस्था

तो जीवन में आनंद!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शृंगार सजाये

शंकर माने कृष्ण माने

माने गुरू ज्ञानी

हम तो जाने कोई भी रुप को

धर्म रुप से जाने

अभिषेक करें तिलक करें

करें मन की मानी

ऐसे ऐसे जीवन जीये

जैसे जैसे भक्ति जाने

हम है ऐसे भारतवासी

जो घर घर भगवान माने

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अकेले बैठते है

बिना जगत के, बिना संसार के,

सिर्फ अकेले

कोई आता है, जाने तो योग्य है

समझ गये तो सुयोग्य है

पहचान गये तो ....

वाह!

यह है हमारा जीवन

ऐसा है हमारा जीवन

हम है तो ऐसे

यह जाना, यह समझा

जगत हमसे कैसा है

जाना - समझा

संसार हमसे कैसा है

जाना - समझा

परिवर्तन परिवर्तन करें

तो हम खुद पहचाने

तो हम जगत पहचाने

तो हम संसार पहचाने

ओहहह!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मन मथुरा" मनुष्य जन्म से मन साधन पाते है और यह साधन मन!

मन की रचना कहीं गुणधर्म के संयोजन से हुई है। यह गुणधर्म अपना संस्कार, शिक्षा और अपनी धारणा से गंठाता है, गुथाता है, सर्जन होता रहता है।

यह गुणधर्म अपने माता पिता, कुटुंब, समाज, संबंध, शिक्षा, संस्कृति और योग संयोग से उनका सिंचन होता है, हम सदा उनके और वह हमारा हो जाता है। वह धर्म, जीवन, विश्वास, और आत्मीयता का संकलन करता है, जिससे सत्य या ने खुद की पहचान और खुद की महत्वता समझता है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुखडा क्या है स्त्री पुरुष का

कृति है दो प्रियतम का आधार

जगाते है जनम जनम का साथ

निभाये तो संस्कृति रचाये

संस्कृति से धर्म घडत जाये

धर्म से समाज नियमन बनाये

समाज नियमन से शिक्षण होये

शिक्षण से हमारा जीवन आनंद रुपाये

आनंद से परमानंद पाया जाये

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पूर्ण चंद्र देखा किसीने

पूर्ण दिन देखा किसीने

पूर्ण रात देखी किसीने

पूर्ण फूल देखा किसीने

हर पूर्णता आधार है किसीका

चंद्र का आधार है सूरज

दिन का आधार है सूरज

रात का आधार है सूरज

फूल का आधार है सूरज

एक ही सूरज कहींओ के आधार

हम भी ऐसे ही है

हम भी एक है पर है कहींओ के आधार

पुत्र पुत्री है माँ बाप के आधार

पति बने पत्नी बालक के आधार

पत्नी बने कुटुंब के आधार

पर

साथ साथ है

अच्छे नागरिक समाज घडतर के आधार

अच्छे संस्कार है संस्कृति के आधार

अच्छे विचार है शिक्षा के आधार

अच्छे कर्म है धर्म के आधार

यही है मनुष्य जीवन जो है सारे सृष्टि के आधार।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खुद को जानना है।

अपने नयन को अपने नयन से देखो

अपने साँस को लेते हुए क्या क्या विचार आता है, क्या क्रिया करती है, ऐसे ही साँस छोडते क्या विचार आता है, क्या क्रिया करती है वह पहचानो।

अपनी इन्द्रियां क्या क्या करती रहती है वह अनुभव करो।

अगर सब भिन्न भिन्न प्रकार में रहते है, कुछ भिन्न करते रहते है, यह सब समझ सकती हो तो खुद को पहचानने की पहला पथ समझे।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जानते जानते हम क्या क्या जाना

संसार में रह कर संसार न जाना

जगत में रह कर जगत न जाना

मनुष्य में रह कर मनुष्य न जाना

खुद में रह कर खुद न जाना

तो

क्यूँ पूछे किसीको कौन हो?

खुद को जाने सब को जान जाये

यही सत्य की शुद्ध पहचान

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ठंड उष्ण का समन्वय से खिले वसंत

पत्ते बिखरे नये रंग भरने खेले ऐसे तरंग

मन में जागे कहीं उमंग तन में जागे नव यौवन

यही है तनुनवत्व की रीत जो हमें ऋतु शिखाये

भरदे हम भी पुष्टि रंग जीवन में खिल उठे वसंत

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"सांसारिक तृष्णा"

जन्मों की, जगत की, धर्म की, जीवन की, प्रकृति की, सत्य की ऐसी परिमिति है जिससे ही सर्वे विचार और क्रिया का निर्माण होता है। यहां से आरंभ होता है सर्वत्र जहां से हमें संपूर्ण तक गति करनी है।

यह ही हमारी संस्कृति है।

यह ही हमारे शास्त्रों है।

यह ही हमारे आचार्यों ने पाया और शिक्षा प्रदान करते है। जिससे हमें समझ आये और जीवन संवारे।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भगवान तो कण कण में बसे है और रज रज में रहते है, तो भी उनकी मुख्य स्थली को दर्शन करने और उनका माहात्म्य समझने क्यूँ पहूँचना?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यमुना यमुना हे यमुना

प्यारी यमुना मधुर यमुना

रंग रंग यमुना संग यमुना

अंश यमुना वंश यमुना

मन मन यमुना तन यमुना

प्रेम यमुना प्रीत यमुना

नमन नमन यमुना वंदन यमुना

शरण यमुना स्मरण यमुना

वरण वरण यमुना तरण यमुना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जैसे देशवासीयों को देश में रहने के लिए देश का बंधारण का नियमन पालन करना होता है और देश की समृद्धि और शांति प्रस्थापित करनी होती है।

वैसे ही हमारे जीवन को धर्म - कर्म और पुरुषार्थ के बंधारण से नियंत्रित करना होता है। तो ही जीवन निरोगी, तंदुरुस्त और सुखदायक होता है।

यह बंधारण हमें खुदको बनाना होता है - खुदको घडना होता है - खुदको रचना पडता है अपने अनुभव और ज्ञान से - शिक्षा से - धर्म से।

बंधारण से ही जीवन उत्कृष्ट - समृद्ध और प्रिय होता है।

यह योग्य स्वतंत्रता से - योग्य निपुणता से - योग्य मार्ग धारा से और योग्य मनोबल और मापदंड से ही सिंचित किया जाता है।

आप सभी को अपना देश - अपना भारत - अपना बंधारण में योग्य देश जीवन की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

" जय हिंद " भारत माता की जय IN

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" शुद्धा: प्रेम्णातिदुर्लभा: "

धैर्य और एकांत से समझे की हम कितने अनोखे है और हमारी संस्कृति कितनी अलौकिक है🌷🙏🌷

हम अविरत - अखंड पाते रहते है शुद्ध प्रेम - वात्सल्य और पवित्र उर्जा अपने परब्रह्म से🌷🙏🌷

जन्मोजन्म हम उनका सानिध्य - उनकी करुणा - उनका विश्वास - उनका परमार्थ पाते रहे - तो वह कितना दयालु है - मायालु है - परमानंद है - क्षमादानी है - दुर्लभ है 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति की अनोखी विशिष्टता

हमारे आचार्यों की अखंड तपश्चर्या

हमारे भक्तों की श्रेष्ठ अनुकंपा

जो हम सदा " शुद्धा: प्रेम्णातिदुर्लभा "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" शुद्धा: प्रेम्णातिदुर्लभा: "

कितना अनोखा सूत्र है -

अगर हममें शुद्धता है तो हममें अवश्य अलौकिक प्रेम है और यही प्रेम से हम पवित्र और आनंददायक है 🙏

यही तो मनुष्य जीवन की लाक्षणिकता है

यही तो मनुष्य जीवन की सार्थकता है

यही तो मनुष्य जीवन की यथार्थता है

हाँ! मनुष्य जीवन दुर्लभ है

मनुष्य जन्म पाना हमारे अनेकों जन्मों का फल है

भगवान भी अवतार धरने के लिए उत्सुक रहते है

देवों भी जन्म धरने बार बार श्री प्रभु से याचना करते है

हम सीधे परब्रह्म को भक्त, ज्ञानी हो कर उन्हें प्रेरित करते है, आकर्षित करते है, प्रेमक्षित करते है। जिससे उन्हें आना ही पडता है, हमसे जुडना ही पडता है🌷🙏🌷

कितना माधुर्य है मनुष्य जीवन में!

जो हम सदा " शुद्धा: प्रेम्णातिदुर्लभा "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे श्री यमुना! 🌷🙏🌷

तेरे स्मरण से रोम रोम में मधुरा जागे

हे श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

तेरे स्मरण से कोष कोष में पुष्टि जागे

हे श्री गिरिराज! 🌷🙏🌷

तेरे स्मरण से रज रज में व्रज जागे

हे श्री बैठकजी! 🌷🙏🌷

तेरे स्मरण से मन तन में सेवा जागे

हे श्री अष्टसखा! 🌷🙏🌷

तुम्हारे स्मरण से स्वर स्वर कीर्तन जागे

हे श्री वैष्णव! 🌷🙏🌷

तुम्हारे स्मरण से डग डग निरपेक्ष जागे

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" असुर " राक्षस "

यह दोनों दैवी शब्दों है

असुर का अर्थ है असुरक्षित

जो है सुरक्षा के काबिल पर अपने कर्मो से खुद को असुरक्षित बनाता है इसलिए इसे असुर कहते है - जो देवताओं जैसे ही वह बलवान और श्रेष्ठ होते है, पर उनका कार्य, विचार द्वैषी और अहित भरा हिंसक होता है।

राक्षस - जो रक्षक से भक्षक हो जाते है, रक्षक सदा धैर्यवान, बलवान, बुद्धिमान होता है पर वह अपना विवेक, अपना विश्वास, अपनी योग्यता को नष्ट कर देता है, इसलिए वह रक्षक से राक्षस हो जाते है। यह भी देवताओं, ऋषिमुनियों जैसे तपस्वी ही होते है पर अपना अहंकार, अभिमान से वह अपने आपको खो देते है।

समुद्र मंथन में असुरों और राक्षसों को आमंत्रित और आहवान इसलिए ही किया था की कुछ योग्यता पूर्वक ऐसा यज्ञ हो जिससे धर्म का संस्थापन हो और पाप का नाश हो और जगत, प्रकृति और ब्रह्मांड समांतर हो।

असुर और राक्षस कितने श्रेष्ठ है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अनाग्रहश्च सर्वत्र धर्माधर्माग्रदर्शनम् "

हमें वैष्णव होना है तो हममें विवेक धैर्य और शिस्त का नियमन अवश्य होना ही चाहिए - तो ही हम मूल दिशा मूल मार्ग और मूल सिद्धांत पर कदम बढा सकते है - चाहे इसमें कठिन कठिन शिस्त नियमन का अधिनियमन करना हो, जिससे दूसरे की समझ से कोई अवमानना हो पर स्व समझ में अवश्य द्रृडता और नियमन का सिद्धांत ही निभाना सर्वोत्तमता है।

द्रष्टांत के रुप में

साक्षात परब्रह्म श्री नाथजीबावा जब ठकुराणी घाट पधारे तब दामोदरदास हरसानीजी के आसनग्रस्त में श्री वल्लभाचार्यजी निंद में थे और श्री प्रभुको वहां ही रुकने की विनंती दर्शायी - श्रीप्रभु दामोदरदासजी की विनंती स्वीकार वहां ठहरेे - सेवक और दासत्व की अनोखी सैद्धांतिक पराकाष्ठा पर वह आनंदीत हो गये।

धर्म - धर्म पालन और धर्म दर्शन जो भक्त - सेवक और दास सर्वत्र केवल भक्ति का गुण ही पोषते है - सेवते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर नगरी बडी दूर नगरी

कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी प्रेम नगरी

बडी दूर नगरी

नजर नजर दौडाऊँ जहां तक नजर पहुंचे

गूंज गूंज पुकारु जहां तक स्वर पहुंचे

मेरी ऐसी कैसी नजर ऐसी कैसी गूंज

तेरे नैनन नजरे तेरे कर्ण सुने

बडी दूर नगरी

दूर नगरी बडी दूर नगरी

कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी प्रेम नगरी

विरह अश्रु बहाऊँ तेरे मिलन इंतजार में

नरम नरम आंहें भरुँ तेरे यादें ख्यालों में

तेरी ऐसी कैसी रीत ऐसी कैसी प्रीत

मन नही चैन पल पल है वैरेन

कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी प्रेम नगरी

बडी दूर नगरी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जगत क्या है?

सृष्टि क्या है?

जीव क्या है?

मनुष्य क्या है?

पंच भूतों क्या है?

काल क्या है?

आज यह प्रश्नों क्यूं टटोला?

यह प्रश्नों इसलिए टटोला है की शायद शास्त्रोक्त समझ अनेकों को है पर अपने अस्तित्व से जो कुछ कर सकते है वह पहचान नही है - क्यूंकि

हम कलयुग मानते है

हम अपने आपको ऐसा ही जन्म जीवन मानते है

हम अपने आपको पहचानने में केवल अपना अहंकार और आडंबर को सही ही मानते है

हम मन से जीनेवाले है बाकी तो अंधश्रद्धा और अवमानना में हमें जीना है और मरना है।

इनसे यह कह कर मनवा कर मेरा जीवन कुशल और समृद्ध है - बस यही ही घरेड में हम घसीटते घसीटते अनेकों संबंध बांधते - बिछडते - तोडते - निभाते जीये जा रहे है🌷🙏🌷

संशय - संजोग - अनिश्चितता के स्वभावगत समय पसार करते रहते है

खुद को क्या करे? खुद को क्या कहे? खुद को जो माने - जो समझे - जो पहचाने ऐसे ही काल से काल छोडते ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बिनती सुनिए हे नाथ हमारी

नाथ हमारी हे नाथ हमारी

कदम कदम गिरिराज पुकारे

यमुना पान से मन विशुद्धाये

सेवक सेव्य पुष्टि सेवा धराये

तन मन धन अर्पण मेरे श्रीनाथ

बिनती सुनिए हे नाथ हमारी

नाथ हमारी हे नाथ हमारी

रीत गृह सेवा श्रीनाथ बिराजे

आठों शमां वात्सल्य लुटाये

आनंद उत्सव मनोरथ समर्पे

जनम जीवन शरण मेरे श्रीनाथ

बिनती सुनिए हे नाथ हमारी

नाथ हमारी हे नाथ हमारी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वियोग "

श्रीकृष्ण चरित्र गहराई से समझे तो - जन्म से लेकर आखिरी समय तक " वियोग " में ही जीये और " वियोग " को ही प्रमाणित किया🌷

अदभुत - अनोखा और आमूल सिद्धांत है जो इन्होंने क्षण क्षण प्रशिक्षण किया और प्रदिप्त किया जो परब्रह्म की पहचान हो जाती है🌷🙏🌷

जन्म से मातापिता का वियोग

बचपन बितने की घडी में अपने ह्रदय स्वरुप हर प्रेमोन्मत्त आत्मीय वातसल्यामृत पालक मातापिता - सखा - सखी और पशु - पंखी - लीला स्थली - प्रकृति - सृष्टि का वियोग

राजस्व दुष्ट संहारक स्थली मथुरा वियोग

वियोग - वियोग - वियोग

क्या है यह वियोग?

वियोग का अर्थ विशेष योग - पर यह विशेष योग धर्म संस्थापन के लिए किया तो अवश्य मूलत्व का परमोत्तम अनुग्रह - प्रेम विश्वास और पवित्रता🌷🙏🌷

यह ऐसा पुरुषार्थ है जो जीव को भक्त - भक्त को भगवान में एकात्म कर देता है - पुरुषोत्तम कर देता है🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

२ - २ - २०२२

दो से दो

दो से दो हजार बाईस

बाईस में दो दो

दो हजार में एक दो

दो से एक दो

एक दो से दो

जानलो हम सदा दो

समझलो हम सदा दो

पहचानलो हम सदा दो

एक प्रिये एक प्रियतम

एक अंश एक अंशी

दो से ही दो दो और दो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सेवकस्य तु धर्मोङ्यं, स्वामी स्वस्य करिष्यति "

श्री वल्लभाचार्यजी का यह भक्ति सिद्धांत हमारी भक्ति को - हमारे भाव को और हमारे ज्ञान को ढ्रड करना समझाता है🙏

हमें हमारी स्व समझ को योग्य करने के लिए हमें अपने आपको कैसे शिक्षित और संस्कारित होना है - यह लक्षण हमें बताया है🙏

न कोई अंधश्रद्धा को स्वीकारना है

न कोई मान्यता को अपनानी है

स्व संचालित ही शिक्षण और संस्कार हमने जो हमारे आचार्य से पाया हो उन्हें सत्य और विश्वास के साथ आचरण करते करते अनुभूत होते जाना है - जो अवश्य हमारा अज्ञान - अंधकार और आडंबर को नष्ट करके अपने आपमें श्रेष्ठता प्रदान करेगी।

हमारी शिक्षा और संस्कार के अभ्योदय से ही हम समझते जाते है हमारा गुरु - आचार्य और संस्कारिता उदबोधक हमने जो स्वीकारा है - पाया है वह सार्थक है - योग्य है। यह प्राथमिक स्व जतन है🌷🙏🌷

हमने उनका शिष्यपद स्वीकार्य है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दामोदरदास हरसानीजी " जन्म जयंती 🌷🙏🌷

" दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रकट कियो है "

धैर्य - स्थिर और ज्ञानबद्धता से चिंतन करें

तो एक मनुष्य जीव जिसने अपने आपको ऐसा क्या बनाया - सिंचा और साक्षर किया की जगद्गुरु श्री वल्लभाचार्यजी उनके लिए ऐसे गुण गाये🌷🙏🌷

कितना अनोखा - अदभुत प्रमाण है की एक मनुष्य जीव ने अपने आपको इतना ढ़ड - निर्भय - आज्ञाकिंत और समद्रष्ट बनाया की " पुष्टिमार्ग के मूल में अपना स्थान और कक्षा प्राथमिक प्रथम संस्थापन पर प्रजवल्लित कर दिया🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्यजी की आचार्यता को स्वीकारा और अपननाया और विश्वास, पवित्र और विशुद्धता प्रमाणित किया ऐसे आत्मीय पुष्टि तत्व को कोटि कोटि प्रणाम🙏

" दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रकट कियो है "

यह सूत्र हमें बार बार संकेत करते है - जागृत करते है - सूचित करता है👍

जागो हे मनुष्य जीव जागो! यही ही जन्म, जीवन...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी लीला अपरंपार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तु है सबका पालनहार

कौन करे दु:ख पुकार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तु है जन्मजीवन आधार

कौन रहे निराधार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तु है आनंद प्रेम उदगार

कौन करे किसे गुहार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तु है कर्मनिधान कर्णाधार

कौन करे दुष्ट व्यवहार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तु है कण कण विश्वाधार

कौन न रहे कृपा नजर

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तु है परब्रह्म ब्रह्माधार

कौन रहे बिन संसार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

तेरी लीला अपरंपार

हे कृष्ण! तेरी लीला अपरंपार

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हृदयेश्वर हे हृदय विहारी

हृदयेश्वर हे हृदय विहारी

तुम ही हो मेरे प्रियतम प्यारी

तुम ही हो मेरे प्रियतम प्यारी

सेवा का अधिकार दिजिए

तुम ही हो मेरा विश्वास आधारी

हे यमुना! हे प्रिये प्राणेश्वरी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्कूल नही तो शिक्षा नही

ऑनलाइन पर विद्या नही

हर कोई का व्यवहार पैसा

हर कोई होगा हर कोई जैसा

हरीफाई हरीफाई चारों ओर

काटेंगे तुटेंगे मरेंगे सारे ओर

न रहेगा आत्मीय संबंध ऐसा

मातापिता पुत्रपुत्री करेंगे पैसा

जीवन हो जायेगा पैसा पैसा

सांस पैसा पानी पैसा धान पैसा

न कोई दानी न कोई सेवा

हर कोई कहेंगे मेरा मेवा

किसका धन किसका मन

हर कोई लुटे हर कोई तन

सच! गजब जमाना गजब जीवन

कहते कहते थके कलयुग जीवन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मन में पधारे तन से जगाएं

वल्लभ वल्लभ स्मरण कराएं

नजर नजर पर दर्शन निहाले

वल्लभ वल्लभ आठों शमां सिद्धाएं

अधर अधर पर गूंज उठाएं

वल्लभ वल्लभ स्वर दश दिशाएं गूंजाएं

सांस सांस पर प्राण गुलाएं

वल्लभ वल्लभ आंतर आनंद स्पंदनाएं

हे वल्लभ! मेरा शरण स्वीकारना

शरण शरण से चरण स्पर्शाना

तु ही एक आधार तु ही एक उद्धार

जन्म जीवन का ब्रह्म दिक्षाकार

तुझे घट घट नमन तुझे क्षण क्षण वंदन

सदा रहना साथ हर जन्म जीवन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मनुष्य जन्म का अर्थ आनंद है

मनुष्य जीवन का पुरुषार्थ आनंद है

मनुष्य संस्कार का संस्कृत आनंद है

मनुष्य धर्म का संस्थापन आनंद है

मनुष्य कर्म का फल आनंद है

मनुष्य वर्ण का वरण आनंद है

मनुष्य शरण का शिक्षण आनंद है

मनुष्य चरण का स्पंदन आनंद है

मनुष्य पूरण का नियमन आनंद है

मनुष्य प्रेम का स्वीकार आनंद है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तपश्चर्या "

कुटुंब में कहीं सदस्यों थे - जिनमें मातापिता - पुत्रें-पुत्रवधूयें और नन्हें से छोटे से लाडले दुलारे पौत्री-पुत्र।

सब स्नातक अलग अलग विषयों में और सब अपना अपना विषयों मुजब अर्थोपार्जन में व्यस्त।

मातापिता सदा मस्त अपने कुटुंब के सुखमें उम्र के साथ न कोई अपेक्षा - न कोई मांग - न कोई आशा के साथ साथ निभाये 🙏 कभि तबियत हलकी फुलकी बिमारी में भी दवाइयां-इलाजों में आलस करके भी वह अपने कुटुंब को आनंदीत करनेमें भूल जाते। ऐसे ही समय बहता गया और वह हलकी फुलकी बिमारी ने अपना साम्राज्य गहरा और बडा किया - मातापिता रोगोंकी चादरों में लपटाते गये वहीं साथ और जवाबदारी निभातें - साथ साथ वहीं पुत्रें-पुत्रवधूयें को अर्थोपार्जन में अपनी प्रगती में मातापिता की रोगी हालतों नजरअंदाज करदी।

ओहह! साथ निभाये साथ रहने साथ सुखके बदलेमें - कष्ट - रोगों और अपवचनों पाने लग...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

युग युग में जन्म लेंगे भगवान🙏

काल काल में अवतार लेंगे भगवान🙏

सदीं सदीयों में लीला करेंगे भगवान🙏

शतक शतक में पधारेंगे भगवान🙏

वर्ष वर्ष अनुभूति करवायेंगे भगवान🙏

दिन दिन अनुभव बतायेंगे भगवान🙏

पल पल दर्शन की झांकी देंगें भगवान🙏

क्षण क्षण हाथ थामेंगे भगवान🙏

घडी घडी स्पर्शेंगे भगवान🙏

हाँ! युग युग में है भगवान

हाँ! काल काल में है भगवान

हाँ! सदीं सदीं में है भगवान

हाँ! शतक शतक में है भगवान

हाँ! वर्ष वर्ष में है भगवान

हाँ! दिन दिन में है भगवान

हाँ! पल पल में है भगवान

हाँ! क्षण क्षण में है भगवान

हाँ! घडी घडी में है भगवान

हर हर में है भगवान

कण कण में है भगवान

पण पण में है भगवान

ॠण ॠण में है भगवान

भ्रूण भ्रूण में है भगवान

करुण करुण में है भगवान

प्राण प्राण में है भगवान

अच्छा! तो हम पहचानते क्यूँ नहीं?

बस! यहां से आरंभ होता है नही पहचानने की कडी

बिना काबेलियत.......

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी नजर से नजर मिलते

पाता हूं स्पंदन ऐसा

जो मेरा अंग अंग तडपता है

तेरे स्वर से स्वर मिलते

गूंजता हूं गीत ऐसा

जो मेरा रोम रोम नाचता है

तेरे चरण से शरण मिलते

जगाता हूं तेज ऐसा

जो आत्म सूरज किरणें प्रसारता है

तेरे प्रेम से प्रेम मिलते

पलता हूं अमृत ऐसा

जो मेरा दिल परमात्मा है

ऐसे राधा - ऐसे कृष्ण

ऐसे गोपि - ऐसे गोप

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मनुष्य मनुष्य मनुष्य

जो सुनता है

जो समझता है

जो जानता है

जो स्वीकारता है

जो अपनाता है

जो अनुभवता है

जो पामता है

जो साक्षरता है

जो सिद्धता है

जो कहता है

जो समझाता है

जो सीखाता है

जो पढाता है

हाँ! हर अक्षर का अर्थाभाव करता है

हाँ! हर स्वर का मूल्यांकन करता है

हाँ! हर विचार का चिंतन करता है

हाँ! हर योग्यता का अध्ययन करता है

हाँ! हर सत्यता का सिद्धांत रचता है

अनोखा - अकेला - एकांकी से अपने आपको परिस्कृत करके जो नीति - रीति - विधि को समाज - संसार - जगत में प्रसिद्ध करता है अपने सामर्थ्य बल से 🙏 युग युग और युगों से चक्र चलता ही रहेता है - है ने एक रहस्य!👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति हमारी संस्कृति हमारी संस्कृति

बार बार बार बार बार बार हम कहते है

मूल संस्कृति हमारी संस्कृति मूल संस्कृति हमारी संस्कृति

हमारे ऋषिमुनियों ने हजारों वर्ष संशोधन और तपश्चर्या की और जगाई - रचाई - समझाई

हम गर्व लेते है - हम स्वभिमान जताते है

हम हिन्दुस्थानी हमारे पूर्वजों ने आत्मीय संस्कृति उजागर की है।

हम अपने आपसे वाह लेते है पर कभी चाह लिया?

हम अपने आपसे स्वीकार करते है पर कभी आंतरिक सिद्धांत से गहराई से अपने आपको तोला?

हम बातें बनाते है - बतंगड करते है पर कभी सही करना समझा और सीखा?

चार उच्चके सुना कहा करके अपने आपको श्रेष्ठ - उत्तम समझते है पर कभी सत्यता टटोलने का धर्म अपनाया?

अंधेरी नगरी में गंडु राजा - मेरा तोल तु न जाने तेरा तोल मैं ही जानूं

बोलों!

युरोप - अमेरिका - ग्रीस सब जाने - सब स्वीकारे - सब अपनाये - सब साध्ये और हम केवल...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहहह कितने मनुष्य!

कितने मन!

कितने तरंग!

कितनी मानसिकता!

कितनी मान्यता!

कितना मनचाहा!

कितनी मनधीरता!

कितने मनोबल!

कितना मनमाना!

कितनी मनस्थिति!

कितने मनस्वी!

कितना मनमोहक!

कितने मनदीप!

कितने मननशील!

कितने मनरोगी!

कितने मनभोगी!

कितने मनयोगी!

कितने मनवियोगी!

कितने मनवांछित!

कितने मनवीर!

इसमें मैं एक, मेरा मन ओहह!

मेरा मन मैं ही जानूं

मेरा मन मैं ही मानूं

मेरा मन मैं ही थानूं

मेरा मन मैं ही स्वीकारु

मेरा मन मैं ही संवारु

मेरा मन मैं ही वारु

मेरा मन मैं ही दौडाऊँ

मेरा मन मैं ही ललकारु

मेरा मन मुझसे बावरा

मेरा मन मुझसे स्थिर

सच! मेरा मन मेरा जन्म मेरा वदन मेरा धर्म मेरा जीवन🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कान्हा - प्रथम

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "